2 ईदगाह - प्रेमचंद

उन्मुखीकरण

पथिकों को जलती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया।
खुशबू भरे फूल देते हैं,
हमको नव फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम भी तो कुछ देना सीखें।

प्रश्न

1. पथिकों को जलती दुपहर में सुख व आराम किससे मिलता है?
2. खुशबू भरे फूल हमें क्या देते हैं?
3. 'हम भी तो कुछ देना सीखें' - कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उद्देश्य

कहानी विधा की भाषा शैली से परिचित कराते हुए छात्रों में कहानी लेखन कला का विकास करना और त्याग, सद्भाव व विवेक जैसे संवेदनशील कर्त्तव्य बोध संबंधी गुणों का विकास करना और बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति श्रद्धा व आदर की भावना का विकास करना है ।

विधा विशेष

'कहानी' शब्द 'कह' धातु के साथ 'आनी' कृत प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'कह' का आशय 'कहना' से है । किसी घटना या बात का सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाना ही कहानी है । इस कहानी में दादी व पोते का मार्मिक प्रेम दर्शाया गया है । इसमें कथन व संदर्भ, वातावरण का सजीव चित्रण है । इसमें बाल्यावस्था की निर्मल भावनाओं का सुंदर प्रतिबिंब दर्शाया गया है ।

लेखक परिचय

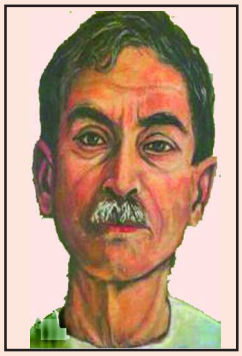

प्रेमचंद का जन्म एक ग़रीब घराने में काशी में 31 जुलाई, 1880 को हुआ। इनके बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्होंने ट्यूशन पढ़ाते हुए मैट्रिक तथा नौकरी करते हुए बी.ए. पास किया। इन्होंने लगभग एक दर्जन उपन्यास और ढाई सौ कहानियों की रचना की। इन्हें "उपन्यास सम्राट" भी कहा जाता है। इनकी कहानियाँ मानसरोवर शीर्षक से आठ खंडों में संकलित हैं। *गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, कर्मभूमि, रंगभूमि, कायाकल्प, प्रतिज्ञा, मंगलसूत्र* आदि इनके *प्रमुख उपन्यास हैं। इनकी प्रमुख कहानियों में पंचपरमेश्वर, बड़े घर की बेटी, कफ़न* आदि प्रमुख हैं।

छात्रों के लिए सूचनाएँ

1. विषय प्रवेश ध्यान से पढ़िए, पाठ्य विषय समझिए।
2. पाठ ध्यान से पढ़िए, जिस शब्द का अर्थ समझ में नहीं आता उसके नीचे रेखा खींचिए।
3. रेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।
4. समझ में न आने वाले अंश हो तो छात्र समूहों में या अध्यापक से चर्चा कीजिए।

विषय प्रवेश : *प्राचीन काल से ही नैतिक मूल्य भारतीय जीवन के प्रतिबिंब रहे हैं। इसका रूप हर भारतीय में समा हुआ है। हम अपने बुज़ुर्गों (वयोवृद्ध) का बड़ा ध्यान रखते हैं। जैसे इस कहानी में दर्शाया गया है-*

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद आज ईद आयी है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात! वृक्षों पर कुछ अजीब हरियाली है। खेतों में कुछ अजीब रौनक़ है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो, कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा है! ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

लड़के सबसे ज़्यादा प्रसन्न हैं। बार-बार जेब से खज़ाना निकालकर गिनते हैं। महमूद गिनता है, एक-दो, दस-बारह। उसके पास बारह पैसे हैं। मोहसिन के पास पंद्रह पैसे हैं। इनसे अनगिनत चीज़ें लाएँगे- खिलौने, मिठाइयाँ, बिगुल, गेंद और न जाने क्या-क्या। और सबसे ज़्यादा प्रसन्न है हामिद। वह भोली सूरत का चार-पाँच साल का दुबला-पतला लड़का था। उसका पिता गत वर्ष हैज़े की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली पड़ती गयी और एक दिन वह भी परलोक सिधार गयी। किसी को पता न चला कि आख़िर अचानक यह क्या हुआ।

अब हामिद अपनी दादी अमीना की गोदी में सोता है। दादी अम्मा हामिद से कहती है कि उसके अब्बाजान रुपये कमाने गये हैं। अम्मीजान अल्लाह मियाँ के घर से उसके लिए बहुत-सी अच्छी चीज़ें लाने गयी हैं। आशा तो बड़ी चीज़ है। हामिद के पाँव में जूते नहीं हैं, सिर पर एक पुरानी टोपी है, जिसका गोटा काला पड़ गया है। फिर भी वह प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन है और उसके घर में दाना तक नहीं है। लेकिन हामिद! उसके अंदर प्रकाश है, बाहर आशा की किरण। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है- ''तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊँगा। बिलकुल न डरना।

अमीना का दिल कचोट रहा है। गाँव के बच्चे अपने पिता के साथ जा रहे हैं। हामिद का अमीना के सिवा कौन है? भीड़ में बच्चा कहीं खो गया तो क्या होगा? तीन कोस चलेगा कैसे? पैरों में छाले पड़ जाएँगे। जूते भी तो नहीं हैं। वह थोड़ी दूर चलकर, उसे गोदी ले लेगी, लेकिन यहाँ सेवइयाँ कौन पकाएगा? पैसे होते तो लौटते-लौटते सारी सामग्री जमा करके झटपट बना लेती। यहाँ तो चीज़ें जमा करते-करते घंटों लगेंगे।

गाँव से मेला चला। और बच्चों के साथ हामिद जा रहा था। शहर का दामन आ गया। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे हैं। बड़ी-बड़ी इमारतें - अदालत, कॉलेज, क्लब, घर आदि दिखायी देने लगे। ईदगाह जानेवालों की टोलियाँ नज़र आने लगीं। एक-से-एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए हैं। सहसा ईदगाह नज़र आयी और उसी के पास ईद का मेला। नमाज़ पूरी होते ही सब बच्चे मिठाई

मानव की सेवा करना मानव का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है। - विनोबा भावे

और खिलौनों की दुकानों पर धावा बोल देते हैं। हामिद दूर खड़ा है। उसके पास केवल तीन पैसे हैं। मोहसिन भिश्ती खरीदता है, महमूद सिपाही, नूरे वकील और सम्मी धोबिन। हामिद खिलौनों को ललचाई आँखों से देखता है। वह अपने आपको समझाता है, ''मिट्टी के तो हैं, गिरें तो चकनाचूर हो जाएँ।'' फिर मिठाइयों की दुकानें आती हैं। किसी ने रेवड़ियाँ लीं, किसी ने गुलाबजामुन, किसी ने सोहन हलवा। मोहसिन कहता है, ''हामिद, रेवड़ी ले ले, कितनी खुशबूदार है।'' हामिद ने कहा, ''रखे रहो, क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?''

सम्मी बोला, ''तीन ही पैसे तो हैं, तीन पैसे में क्या-क्या लोगे?'' हामिद मौन रह गया।

मिठाइयों के बाद लोहे की चीज़ों की दुकानें आती हैं। कई चिमटे रखे हुए थे। हामिद को ख्याल आता है, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं तो हाथ जल जाते हैं, अगर चिमटा ले जाकर दादी को दे दें, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उनकी उँगलियाँ कभी नहीं जलेंगी। दादी अम्मा चिमटा देखते ही दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी और कहेंगी- ''मेरा बच्चा! अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हज़ारों दुआएँ देती रहेंगी। फिर पड़ोस की औरतों को दिखाएँगी। सारे गाँव में चर्चा होने लगेगी। हामिद चिमटा लाया है। कितना अच्छा लड़का है। बड़ों की दुआएँ सीधे अल्लाह के दरबार में पहुँचती हैं और तुरंत सुनी जाती हैं। हामिद ने दुकानदार से पूछा, ''यह चिमटा कितने का है?'' छह पैसे क़ीमत सुनकर हामिद का दिल बैठ गया। हामिद ने कलेजा मज़बूत करके कहा, ''तीन पैसे लोगे?'' दुकानदार ने बुलाकर चिमटा दे दिया। हामिद ने उसे इस तरह कंधे पर रखा, मानो बंदूक हो और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास आया। दोस्तों ने मज़ाक किया, ''यह चिमटा क्यों लाया पगले! इसे क्या करेगा?''

घर आने पर अमीना हामिद की आवाज़ सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में उठाकर प्यार करने लगीं। सहसा हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

''यह चिमटा कहाँ से लाया?''

''मैंने मोल लिया है अम्मा।''

''कितने पैसे में?''

''तीन पैसे दिये।''

प्रश्न

1. ईद के दिन का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।
2. हामिद ग़रीब है फिर भी वह ईद के दिन अन्य लड़कों से अधिक प्रसन्न है, क्यों?
3. हामिद के खुशी का कारण क्या है?

अमीना ने अपने माथे पर हाथ रखा। वह अफ़सोस करती हुई, आह! भरती हुई बोली- ''यह कैसा बेसमझ लड़का है कि दोपहर हुई, कुछ खाया न पिया। लाया क्या, चिमटा! सारे मेले में तुझे और कोई चीज़ न मिली, जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया?''

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, यह मुझसे देखा न जाता था अम्मा। इसलिए मैं इसे लिवा लाया।''

अमीना का क्रोध तुरंत स्नेह में बदल गया। यह मूक स्नेह था, मार्मिक प्रेम था जो रस और स्वाद से भरा। बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा! वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी की याद बनी रही। अमीना का मन गदगद हो गया। आँचल फैलाकर हामिद को दुआएँ देती जातीं और आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूँदें गिराती जाती थीं। हामिद इसका रहस्य क्या समझता!

- (प्रेमचंद की कहानी पर आधारित)

4. हामिद चिमटा क्यों खरीदना चाहता था?
5. हामिद के हृदयस्पर्शी विचारों के प्रति दादी अम्मा की भावनाएँ कैसी थीं?

अर्थग्राह्यता-प्रतिक्रिया

(अ) प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. 'ईदगाह' कहानी के कहानीकार कौन हैं? इनकी रचनाओं की विशेषता क्या है?
2. बालक प्रायः अलग-अलग स्वभाव के होते हैं। कहानी के आधार पर बताइए कि हामिद का स्वभाव कैसा है?

(आ) हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए।

1. हामिद के पास पचास पैसे थे। ( )
2. अमीना हामिद की मौसी थी। ( )
3. मोहसिन भिश्ती खरीदता है। ( )
4. हामिद खिलौने खरीदता है। ( )

(इ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. अमीना का क्रोध तुरंत ..... में बदल गया।
2. क़ीमत सुनकर हामिद का दिल.....गया।
3. हामिद ..... लाया।
4. महमूद के पास ..... पैसे थे।

(ई) अनुच्छेद पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

बहुत समय पहले की बात है। श्रवण कुमार नामक एक बालक रहता था। उसके माता-पिता देख नहीं सकते थे। किंतु उन्हें इस बात का दुख नहीं था। उनका पुत्र सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहता था। एक दिन माता-पिता ने अपने पुत्र से चारधाम यात्रा की इच्छा व्यक्त की । पुत्र काँवर में बिठाकर अपने माता-पिता को चारधाम की यात्रा पर ले गया। रास्ते में माता-पिता को प्यास लगी। उनके लिए पानी लाने के लिए श्रवण कुमार तालाब के पास पहुँचा। उसी समय राजा दशरथ तालाब के पास वाले जंगल में शिकार कर रहे थे। श्रवण द्वारा तालाब में लोटा डुबाने की ध्वनि

सुनकर वे हाथी समझ बैठे। शब्दभेदी बाण चला दिया। इस बाण से श्रवण परलोक सिधार गया। माता-पिता की सेवा में आजीवन आगे रहने वाला श्रवण, इतिहास में सदैव अमर रहेगा।

1. माता-पिता की सेवा में कौन तत्पर था? 2. श्रवण कुमार के बारे में आप क्या जानते हैं?
3. रेखांकित शब्द का संधि विच्छेद कीजिए। 4. अनुच्छेद के लिए उचित शीर्षक दीजिए।

अभिव्यक्ति-सृजनात्मकता

(अ) इन प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए।

1. हामिद के स्थान पर आप होते तो क्या खरीदते और क्यों?
2. अपनी दादी के प्रति हामिद की भावनाएँ कैसी थीं? अपने शब्दों में लिखिए।

(आ) 'ईदगाह' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

(इ) हामिद और उसके मित्रों के बीच हुई बातचीत की किसी एक घटना को संवाद के रूप में लिखिए।

(ई) बड़े-बुज़ुर्गों के प्रति आदर, श्रद्धा और स्नेह भावनाओं का महत्व अपने शब्दों में बताइए।

भाषा की बात

(अ) कोष्ठक में दी गयी सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. ईद, प्रभात, वृक्ष (एक-एक शब्द का वाक्य प्रयोग कीजिए और उसके पर्याय शब्द लिखिए।)
2. अपराधी, प्रसन्न (एक-एक शब्द का विलोम शब्द लिखिए और उससे वाक्य प्रयोग कीजिए।)
3. मिठाई, चिमटा, सड़क (एक-एक शब्द का वचन बदलिए और वाक्य प्रयोग कीजिए।)

(आ) सूचना पढ़िए और उसके अनुसार कीजिए।

1. बेसमझ, सद्भाव, निडर (उपसर्ग पहचानिए।)
2. दुकानदार, भड़कीला, ग़रीबी (प्रत्यय पहचानिए।)
3. मीठा, प्रसन्न, बूढ़ा (भाववाचक संज्ञा में बदलिए।)

(इ) इन्हें समझिए और अभ्यास कीजिए।

1. हामिद के बाज़ार से आते ही अमीना ने उसे छाती से लगा लिया।
2. हामिद ने कहा कि घर की देखरेख दादी ने की।

(ई) 1. नीचे दिया गया उदाहरण समझिए। उसके आधार पर दिये गये वाक्य बदलिए।

रमज़ान के पूरे तीस रोज़ों के बाद ईद
- आयी।
- आयी है।
- आयी थी।
- आयी होगी।
- आ रही थी।

1. हामिद चिमटा लाया। 2. हामिद दादी से बोला। 3. हामिद ने चिमटा लिया।

2. पाठ में आये मुहावरे पहचानिए और अर्थ लिखकर वाक्य प्रयोग कीजिए।

परियोजना कार्य

वरिष्ठ नागरिकों (वयोवृद्धों) के प्रति आदर-सम्मान की भावना से जुड़ी कोई कहानी ढूँढ़कर लाइए। कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

पठन हेतु

यह रास्ता कहाँ जाता है?

पहला दृश्य

(नाटकगृह का दृश्य। मंच पर नानी और नवासा-नवासी हैं। नानी आँगन में बैठी हुई है। आकाश में तारे चमक रहे हैं। मोना और गोलू कहानी सुनाने के लिए नानी से ज़िद कर रहे हैं।)

मोना : नानी, नानी। एक कहानी सुनाओ न!

गोलू : (नानी को मनाने के स्वर में) हाँ, नानी, कहो न!

नानी : तो तुम दोनों नहीं मानोगे। अच्छा सुनाती हूँ, सुनो। (एक क्षण ठहरकर नानी कहती है।) बहुत पुरानी बात है। उज्जैन नामक एक नगर था।

मोना : वह तो आज भी है।

नानी : कहाँ है, बतला तो?

मोना : मध्य प्रदेश में।

गोलू : हाँ, नानी, उज्जैन नाम का एक नगर था, फिर?

नानी : राजा भोज वहाँ का राजा था।

मोना : मेरी किताब में लिखा है, नानी, कि वह बहुत बड़ा विद्वान था। उसके दरबार में एक कवि रहता था, नाम था उसका माघ।

गोलू : नानी को कहने दो न! किताब की बात बाद में पढ़ लेना। नानी आगे।

नानी : राजा भोज प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए भेष बदलकर रात में घूमा करता था।

गोलू : भेष बदलकर काहे, नानी?

नानी : ताकि कोई पहचान न लें। उसके साथ कवि माघ भी रहता था। एक रात प्रजा का सुख-दुःख जानने के लिए दोनों महल से निकले।

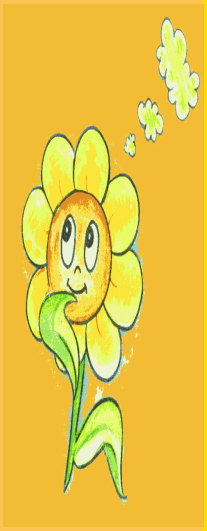

दूसरा दृश्य

(मंच पर अंधेरा होता है। दौड़ रहे घोड़ों की टापों की ध्वनि समीप से दूर जाती है।)

माघ : महाराज! लगता है हम रास्ता भूल गये हैं। इस जंगल में हम भटक गये हैं।

भोज : तुम ठीक कहते हो कवि! हम मुसीबत में फँस गये हैं।

माघ : इस प्रकार हम कब तक भटकते रहेंगे?

भोज : जब तक सबेरा नहीं हो जाता।

माघ : लेकिन यह रात तो ख़तम होने का नाम ही नहीं ले रही है।

भोज : संकट की घड़ी लंबी प्रतीत होती है। बता सकते हो, रात और कितनी बाक़ी है?

माघ : बस सबेरा होने ही वाला है, महाराज! वह देखिए, भृगुतारा बहुत ऊपर आ गया है। वन्य पशु-पक्षी भी जाग चुके हैं।

भोज : तो हम रात भर कवि?

माघ : अब चिंता छोड़ें, यहाँ देखिए, पूरब दिशा पसर रही है, सूर्योदय हो रहा है। प्रकाश फैल रहा है।

भोज : वह तो है, लेकिन यहाँ तो कोई दिखायी भी नहीं देता, जिससे उज्जैन जाने का मार्ग पूछा जाए।

माघ : भला इतने सबेरे इस जंगल में।

भोज : वहाँ देखो, कोई छाया।

माघ : हाँ, महाराज, कोई लकड़हारिन है। लकड़ी चुनने जंगल में आयी है।

भोज : हम उससे ही पूछें।

माघ : ठीक है, महाराज, हमें उसके पास चलना चाहिए।

(पगध्वनि दूर जाकर ठहरती है। मंच पर प्रकाश होता है। प्रकाश में लकड़हारिन के पास खड़े राजा भोज और कवि माघ दिखायी देते हैं। लकड़हारिन लकड़ी चुनना बंद करती है।)

माघ : यह रास्ता कहाँ जाता है, बतला सकती हो?

भोज : (लकड़हारिन को चुपचाप खड़ा देख कर) तुम्हीं से पूछ रहे हैं।

लकड़हारिन : वह तो मैं समझ रही हूँ।

माघ : फिर चुप क्यों हो? बोलती क्यों नहीं?

लकड़हारिन : क्या जवाब दूँ? यही सोच रही हूँ।

भोज : इसमें सोचने की कौन-सी बात है?

लकड़हारिन : है, तभी तो चुप हूँ।

माघ : फिर कहो, हम भी तो सुनें।

लकड़हारिन : यह रास्ता कहीं आता-जाता नहीं है। वह तो यहीं पड़ा रहता है। लोग इस पर आते-जाते रहते हैं। आप दोनों कौन हैं और कहाँ जाना चाहते हैं?

भोज : हम दोनों मुसाफ़िर हैं और उज्जैन जाना चाहते हैं।

लकड़हारिन : मुसाफ़िर तो इस दुनिया में दो ही हैं - एक सूर्य, जो उधर निकल रहा है और एक चाँद, जो उधर मिट रहा है। तुम दोनों न सूर्य हो और न चाँद, फिर मुसाफ़िर कैसे हो?

माघ : ठीक कहती हो। हम दोनों न सूरज हैं और न चाँद। मेहमान अवश्य हैं।

लकड़हारिन : आप लोग मेहमान भी नहीं हो सकते क्योंकि मेहमान भी दो ही होते हैं - एक धन और दूसरा यौवन। समझे।

भोज : मैं राजा हूँ।

लकड़हारिन : क्योंकि राजा भी दो ही हैं - एक इंद्र और दूसरा यमराज। कहो, तुम इन दो में से कौन हो?

माघ : (चिढ़कर) तुम हमें नहीं जानती हो? हम दो ऐसे पुरुष हैं, जो किसी को भी कोई कसूर

करने पर माफ़ कर सकते हैं।

लकड़हारिन : इतना गुमान नहीं करो तो बेहतर। माफ़ भी दो ही कर सकती हैं - एक धरती और दूसरी नारी। तुम दोनों न धरती हो और न नारी, फिर माफ़ करने की बात क्यों करते हो?

भोज : सुन रहे हो कवि? यह तो हमारी एक भी नहीं चलने दे रही है। अब क्या करें?

(राजा भोज तथा कवि माघ हारे हुए पुरुषों की तरह चुपचाप खड़े रहते हैं। सोचते हैं।)

भोज : समझो, हम दो हारे हुए व्यक्ति हैं। अब तो रास्ता बतला दो।

लकड़हारिन : रास्ता तो मैंने कभी का बतला दिया होता, किंतु तुम दोनों सच बोलो तब न! तुम दोनों हारे हुए भी नहीं हो सकते, क्योंकि इस संसार में हारा हुआ एक लोभी और दूसरा स्वार्थी, समझे!

भोज : अब क्या कहते हो, कवि?

माघ : समझ में नहीं आ रहा है, महाराज, क्या कहें, क्या न कहें। हम सब तरह से हार चुके हैं।

भोज : हम सब तरह से हार चुके हैं। हमें नहीं मालूम, हम कौन हैं। तुम्हीं कहो, हम कौन हैं?

(दोनों लकड़हारिन के सामने झुकते हैं।)

लकड़हारिन : ऐसा कर मुझे लज्जित न करें महाराज! मैं आपकी प्रजा हूँ।

माघ व भोज : (आश्चर्य से) तो, तुम हमें जानती हो?

लकड़हारिन : अवश्य जानती हूँ। तुम राजा भोज हो और यह तुम्हारा कवि माघ है। है न?

भोज : सच है, लेकिन किसी से कहना मत। तुम जैसी बुद्धिमान प्रजा मेरे राज्य में बसती है, यह जानकर मैं अति प्रसन्न हूँ। हमें उज्जैन का रास्ता बतला दो और क्षमा कर दो।

लकड़हारिन : प्रजा के सुख-दुःख की तुम्हारी यह चिंता तुम्हारे यश का कारण बनें। जाओ, महाराज, वह है तुम्हारा रास्ता। *(राजा भोज तथा कवि माघ उस ओर जाते हैं।)*

(मंच की रोशनी गुल होती है। आँगन में पहले की तरह नानी, नाती, नतिनी दिखाई देते हैं।)

गोलू : नानी, वह लकड़हारिन ज़रूर तुम्हारी आयु की रही होगी। क्यों, नानी?

मोना : तभी तो वह उतनी होशियार निकली जितनी हमारी नानी हैं। है न, नानी?

नानी : यह सब जाने दो। यह बताओ कि मेरी इस कहानी से तुम दोनों ने क्या सीखा? कुछ सीखा कि नहीं?

गोलू : दीदी, हमने क्या सीखा है, बतलाओ नानी को।

मोना : हमने सीखा है, हमें अहंकार नहीं करना चाहिए। क्यों नानी?

नानी : बिलकुल ठीक समझा है। अहंकार बुरी बात है। हमें उससे बचना चाहिए।

(परदा गिरता है।)

- बाबू रामसिंह की कहानी पर आधारित